The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

‘किसान’ खण्ड काव्य में अभिव्यक्त किसान-जीवन की व्यथा

डॉ. परवेज़ मुहम्मद

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, गांधी फैज़-ए-आम कॉलेज, शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश।

ईमेल- parvezalig5@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17328907

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

‘मैथिलीशरण गुप्त’, ‘खंड काव्य’, ‘किसान’, ‘अंग्रेजी शासन’, किसान-जीवन’, ‘सामंती जीवन और किसान’, ‘तक़ावी’, ‘रेंट’, ‘भू-राजस्व’।

ABSTRACT

भारत की भौगोलिक बनावट और जलवायु कृषि के लिए काफी सुगम है, जो कि इसको एक कृषि प्रधान देश बनाती है। यही कारण है कि भारत की अर्थव्यवस्था हमेशा कृषि से ही फलती-फूलती रही और इसे सोने की चिड़िया कहा जाता रहा। परंतु कालांतर में अपनी मेहनत से अन्न के रूप में सोना उगाने वाला किसान शासन, सत्ता और राजनीति का शिकार हो गया। भारत में किसानों की सबसे दयनीय स्थिति अंग्रेजी शासन में हुई। अंग्रेज भारत में व्यापार के उद्देश्य से आए थे, परंतु सत्ता और शासन प्राप्त होने के बाद उनका पूरा ध्येय भारत की धन संपदा लूटकर ब्रिटेन ले जाना हो गया। इसलिए ब्रिटिश राज में सरकार की आर्थिक नीतियां किसान विरोधी होती चली गयी। किसानों से अधिक से अधिक लगान, अवैध कर और भू-राजस्व वसूला जाने लगा न देने पर जमींदार और सामंत मनमानी और बेदखली करते थे, जिससे किसानों पर कृषि भूमि का अत्याधिक बोझ व कर्ज बढ़ने लगा। उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति खराब होने लगी। असंख्य किसान भूमि विहीन होकर खेत मजदूर हो गए और लाखों किसानों को रोजी रोटी की तलाश में घर छोड़ कर बाहर निकलना पड़ा। अंग्रेजों ने इस अवसर का फायदा उठाकर बेरोज़गार किसानों को मॉरीशस, ट्रिनिडाड और फिज़ी आदि निर्जन द्वीपों पर शर्तबंद कुली बनाकर भेजना शुरू कर दिया। जहां इन बंधुआ मजदूरों पर अत्यधिक अत्याचार होता था। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय

मजदूरों पर होने वाले अत्याचार का विरोध किया। जिसकी सफलता से देश-विदेश में अंग्रेजों की इस नीति का व्यापक विरोध प्रारंभ हुआ। किसानों की इस समस्या को बुद्धजीवियों ने भी उठाना शुरू किया। इन्हीं सब की प्रेरणा से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण 'गुप्त' ने 'किसान' खण्ड काव्य की रचना की। इसे उन्होंने आत्मचरितात्मक शैली में 'प्रार्थना', 'बाल्य और विवाह', 'गृहस्थ', 'सर्वस्यान्त', 'देश-त्याग', 'फिजी', 'प्रत्यावर्तन' और 'अंत' इन आठ सर्गों में बाँट कर लिखा तथा संपूर्ण किसान जीवन की समस्याओं को उठाया और उनका समाधान भी प्रस्तुत किया।

साहित्यिक समीक्षा:

भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है और उसकी अर्थव्यवस्था हमेशा कृषि पर ही निर्भर रही। प्राचीनकाल से ही भारत छोटे-छोटे राज्यों में बटा हुआ था, उस समय राजा और सामंत वर्ग का किसानों से संघर्ष होता रहता था। सत्ता और शासन धर्म का सहारा लेकर पुरोहितों के माध्यम से किसानों का शोषण करते थे। इस संबंध में चौधरी महिपाल सिंह 'नाला' अपनी पुस्तक 'किसान-चेतना और चौधरी चरण सिंह' की भूमिका में लिखते हैं कि- "प्राचीन काल में मंत्रबल के आधार पर वैदिक पुरोहितों का तथा उनकी शक्ति का राजतंत्र आधिपत्य स्वीकार करते थे। यज्ञों का अनुष्ठान करने वाले ब्राह्मणों पर धन और दौलत की बौछार करके राजा लोग चैन की सांस लेते थे तथा ऋषिवाक्यों द्वारा राजा लोग प्रजा का शोषण करते और प्रजा-शक्ति के विकास में बाधा डालते थे। राजा लोग सूर्य की भांति प्रजा का, चाहे उसमें किसान हो, वैश्य हो, सारा धन-वैभव और उसकी इज़्ज़त लूटकर अपनी मनोकामना पूरी करते थे।"[1] सभी राजा और राज्य एक जैसे न भारत के कई राजाओं ने खेती-किसानी को सुगम बनाने के लिए बहुत से अच्छे कार्य किए मौर्य वंश के राजाओं ने सिचाई हेतु नदी पर बांधों द्वारा जलाशयों का निर्माण कराया। गुप्त वंश में सुदर्शन झील का निर्माण कार्य हुआ, तो वहीं "कृषि के प्रसार और सुधार के लिए मुगल राज्य किसानों को प्रोत्साहन और ऋण (तकावी) भी प्रदान करता था।"[2]

मुग़ल शासन के कमज़ोर पड़ने से भारत पर अंग्रेजों की पकड़ धीरे-धीरे मजबूत होने लगी। गवर्नर जनरल लॉर्ड कॉर्नवालिस ने सन 1793 में स्थाई बंदोबस्त के तहत बंगाल, बिहार और उड़ीसा की ज़मीन ज़मीदारों को दे दी, जिसके तहत उपज का एक बड़ा हिस्सा किसानों द्वारा ज़मीदारों और सरकार को देना होता था। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और उसके दमन के पश्चात् सम्पूर्ण भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। तत्पश्चात वारेन हेस्टिंग्स ने सबसे पहले इस धारणा को सामने रखा

कि सारी जमीन सरकार की है। जमीन जोतने वाला किसान तो सरकार से जमीन किराए पर लेता है। अतः "ज़मीन की उपज का सरकारी हिस्सा 'टैक्स' नहीं 'रेंट' है।"[3] इस तरह ब्रिटिश राज में सरकार की आर्थिक नीतियां ज़मीदारों, साहूकारों के मन माफिक और किसान विरोधी होती चली गयी। अंग्रेज, ज़मीदारों के माध्यम से किसानों पर बहुत अत्याचार करने लगे। किसानों से अधिक लगान, अवैध कर, और ज्यादा से ज्यादा भू-राजस्व लिया जाता था और उनसे अवैतनिक श्रम भी कराया जाता था, ऐसा न करने पर ज़मींदार व सामंत मनमानी और बेदखली करते थे। यही कारण था कि किसानों पर कृषि भूमि का अत्याधिक बोझ व कर्ज बढ़ने लगा जिससे किसानों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति खराब होने लगी। असंख्य किसान भूमि विहीन होकर खेत मज़दूर हो गए और लाखों किसानों को रोजी रोटी की तलाश में घर छोड़ कर बाहर निकलना पड़ा। अंग्रेजों ने इस अवसर का फायदा उठाया। वह इन बेरोज़गार किसानों को मॉरीशस, ट्रिनिडाड और फिज़ी आदि द्वीपों पर शर्तबंद कुली बनाकर भेज देते थे, जहाँ से इनका वापस आना लगभग असंभव हो जाता था इस संदर्भ में मैथिलीशरण 'गुप्त' की ये पंक्तियां उल्लेखनीय हैं-

"प्रभुवर! हम क्या कहें कि कैसे दिन भरते हैं ?

अपराधी की भाँति सदा सबसे डरते हैं ।

याद यहाँ पर हमें नहीं यम भी करते हैं,

फिजी आदि में अंत समय जाकर मरते हैं।''[4]

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मजदूरों पर होने वाले अत्याचार का विरोध किया। जिसकी सफलता से देश-विदेश में अंग्रेजों की इस नीति का व्यापक विरोध प्रारंभ हुआ। किसानों की इस समस्या को बुद्धजीवियों ने भी उठाना शुरू किया। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में इस विषय पर संस्मरण और लेख लिखे जाने लगे। इन्हीं सब की प्रेरणा से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'किसान' खण्ड काव्य की रचना की। इस खंड काव्य को गुप्त जी ने आत्मचरितात्मक शैली में लिखा है, जिसको 'प्रार्थना', 'बाल्य और विवाह', 'गृहस्थ', 'सर्वस्यान्त', 'देश-त्याग', 'फिजी, 'प्रत्यावर्तन', और 'अंत' आठ सर्गों में बाँट कर लिखा है।

'प्रार्थना' सर्ग में कवि कृषक जीवन में जन्म मिलने पर ईश्वर से उलझना करता है कि उसको संसार में सर्वाधिक श्रम वाले कृषक जीवन में ही जन्म क्यों दिया। कवि की दृष्टि में कृषक जीवन से अच्छा पशु-पक्षियों का जीवन है इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"कृषक-वंश को छोड़ ना था क्या और ठिकाना?

नरक-योग्य भी नाथ! न तुमने हमको माना!

पाते हैं पशु-पक्षी आदि भी चारा-दाना,

और अधिक क्या कहें, तुम्हारा है सब जाना॥"[5]

'बाल्य और विवाह' सर्ग में कवि अपने बीते हुए बचपन को बड़ी प्रसन्नता से अभिव्यक्त करता है किसान परिवार में बच्चों का बचपन गाय-भैंस चराने, नदी-तालाब में नहाने और साथियों के साथ खेत खलियानों में खेल खेलने में व्यतीत होता है कवि ने इस सब को जिया है। इस दौरान कवि को अपने घर में माता-पिता से जो कुछ दूध या घी प्राप्त कर सुख मिला। उसको बिना छुपाये बड़े गर्व से अभिव्यक्त किया है यथा-

''सुख भी नहीं छिपाऊँगा मैं,पाया है मैंने जितना,

कभी-कभी घी भी मिलता था, यद्यपि वह था ही कितना।

माता-पिता छाँछ लेकर ही मधुर महेरी करते थे,

भैंस और गायों की रहँटी घी दे देकर भरते थे॥"[6]

एक किसान बमुश्किल अपना परिवार पालता है ऐसे में नौजवान बच्चों की शादी का खर्च उनके सामने नई परेशानी पैदा कर देता है क्योंकि किसान पहले से ही खाद, पानी और बीज आदि खरीदने में कर्जदार बन चुका होता है। बच्चों की शादी में उसकी गाय, भैंस, बैल और बछिया आदि सब नीलाम हो जाते हैं। कवि अपनी शादी का भी यथार्थ चित्र खींचता है यथा-

"दुखी किंतु निष्पात पिता को इस अदृष्ट पर क्रोध हुआ,

फिर भी वह संबंध न करना उनका अनुचित बोध हुआ।

भैंस और गायों का देना उन्हें बेच कर चुका दिया,

जो बाकी बच रहा उन्होंने उससे मेरा ब्याह किया॥"[7]

'गार्हस्थ्य' सर्ग में कवि ने किसानों के कष्टसाध्य गृहस्थ जीवन को अभिव्यक्त किया किसान जीवन भर साहू, जमींदार, पटवारी और महाजन के फेर में पड़ा रहता है कभी जमादार झूठा केस बनाकर किसानों से पैसे ऐंठ लेता है, तो कभी ज़मींदार पहले से दोगुने पैसे लेकर खेत जोतने देता है। भोला-भाला किसान कभी साहू कभी पटवारी तो कभी महाजन से ब्याज पर पैसे लेकर सदा के लिए कर्जदार बना जाता है यथा-

"चलो, महाजन के सम्मुख अब जाकर जोड़े हाथ,

बीज, खवाई वहीं मिलेगी, होंगे वहीं सनाथ!

पहले पहला खाता देखो, दिए गए थे बीस,

होकर वे दो बार सवाये हुए सवा इकतीस!"[8]

'सर्वस्वांत' सर्ग में कवि ने किसान जीवन की उस दशा का वर्णन किया है जिसमें उसका सब कुछ खत्म हो जाता है। माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है। पिता के लिए कर्ज़ का भार अब उस पर है। भारत की खेती वर्षा का जुआ है, वर्षा नहीं होगी तो उपज कैसे होगी, उपज नहीं होगी तो साहू, पटवारी, जमींदार और महाजन का कर्ज़ कैसे चुकेगा? ऐसे में उसकी कुड़की होना स्वाभाविक है यथा-

"संध्या थी उस समय तामसिक याम था,

आया 'कुड़क अमीन' मुझी से काम था।

बस मेरापन आत्म भाव खोने लगा,

जो कुछ था वह सभी कुर्क होने लगा।"[9]

अपना सब कुछ लुट जाने के बाद कुछ समय के लिए तो कवि अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। इसलिए कभी वह अपने साथ हुए अन्याय का बदला लेने के बारे में सोचता है और फिर क्षण भर में ही आत्महत्या कर इस दुःखमय जीवन से छुटकारा चाहता है। यही कारण है कि आज भी "भारत में मामूली-सा कर्ज न चुकाने, परिवार का पालन-पोषण न कर पाने या बेटी का ब्याह न कर पाने की शर्मिंदगी में किसान आत्महत्या कर रहे हैं।"[10] 'देश त्याग' सर्ग में एजेन्ट के प्रपंच द्वारा अपना देश त्याग कर

अच्छे जीवन की लालसा में 'फिजी' भेजे जाने की व्यथा को अभिव्यक्त किया गया है। एजेंट सीधे-साधे कर्ज के बोझ तले दबे किसानों का फायदा उठाकर उन्हें 'फिजी', 'मॉरीशस' आदि देशों में गन्ने की खेती करवाने के लिए शर्तबंद कुली बनाकर भेज देते हैं। पानी के जहाज द्वारा 'फिजी' भेजे जाते समय कवि को अपने देश की याद आती है। वह अपनी मातृभूमि से उलाहना करता है यथा-

"हाय रे भारत! तुझे इतना हमारा भार है-

जो हमारा अंत भी तुझको नहीं स्वीकार है !

मृत्यु-हित भी सात सागर-पार जाना है हमें,

स्वर्ग के बदले वहाँ भी नरक पाना है हमें!"[11]

'फिजी' सर्ग में कवि 'फिजी' में होने वाले अत्याचार को देखकर उसे नरक की संज्ञा देता है वहां कामगारों की महिलाओं को बुरी नजर से देखा जाता है उनके साथ छेड़छाड़ और बालात्कार की कोशिश की जाती है हाथ न आने पर पीटा जाता है। पुरुषों को आधा पेट भोजन देकर दो गुना श्रम कराया जाता है एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"भूमि राम जाने किसकी है, श्रम है यहाँ हमारा,

किंतु विदेशी व्यापारी ही लाभ उठाते सारा।

जड़ यंत्रों को भी तैलादिक भक्ष्य दिया जाता है,

अर्धाशन में हम से दूना काम लिया जाता है।।"[12]

'प्रत्यावर्तन' सर्ग में कवि ने शर्तबंद कुली प्रथा के अंत और भारत के श्रमिकों की घर वापसी के संदर्भ को अभिव्यक्त किया है। श्रमिकों पर जब अत्याचार ज्यादा बढ़ जाते हैं तो इसका व्यापक विरोध होने लगता है। तत्कालीन भारत सरकार को जब सच्चाई का ज्ञान होता है तो वह भी अपने नागरिकों के साथ खड़ी होती है परिणाम स्वरूप इस घृणित प्रथा का अंत होता है और सभी श्रमिकों को उनके देश भेजा जाने लगता है यथा-

"उस घृणित प्रथा से मुक्ति देश ने पाई,

फिर हम लोगों के लिए शुभ घड़ी आई।

भारत को लौटे चले जा रहे हम हैं,

वह गया हुआ स्वातंत्र्य पा रहे हम हैं।।"[13]

'अंत' सर्ग 'किसान' खंडकाव्य का अंतिम सर्ग है जिसमें कवि अपने वतन भारत वापस लौट आने के बाद का वर्णन करता है। कवि न्याय दिलाने वाले अधिकारियों और भारत सरकार की दिल से प्रशंसा करता है विश्व युद्ध में जब भारत सरकार संकट में होती है तो वह स्वयं तो सेना में भर्ती होता ही है साथ ही साथ अपने साथियों को भी सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित करता है। युद्ध में वह अपने प्राणों की बाजी लगाकर सरकार द्वारा उस पर किए गए उपकार का बदला चुका देता है। मृत्यु शय्या पर अंतिम संदेश में भी वह भारत व भारत के निवासियों के लिए मंगल कामना करता है यथा-

"भारतीय मेरे बांधव हैं, घर है मेरा सारा देश,

बस, यह मेरा आत्म-चरित ही है मेरा अंतिम संदेश।

इससे अधिक और क्या अब मैं कह सकता हूँ हे भगवान,

मेरे साथ देश के सारे दुःखों का भी हो अवसान।।"[14]

किसानों की जो दशा अंग्रेजी शासन के अधीन थी, उसमें कोई बहुत ज्यादा सुधार आजादी के बाद भी दिखाई नहीं देता। "आज भी भारत के करोड़ों किसान उसी तरह अधनंगे, भूखे पेट हल चलाते और मटमैले मायूस रहते हैं। उनके चेहरों पर मॉल-मल्टीप्लेक्स में घूमने वाले लोगों के चेहरे-सी दमक नहीं है। कोई भी राष्ट्रीय नेतृत्व उन पर गंभीरता से नहीं सोचता। वे अलग-अलग अंचल में अलग-अलग समय अलग-अलग तरह से गुस्से में आ रहे हैं।"[15] हालिया कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का सड़कों पर उतरकर अपने व्यापक जन-आंदोलनों द्वारा इन्हें वापस कराना इसका ज्वलंत उदाहरण हैं।

सुझाव:

स्वाधीनता पूर्व रचनाकारों ने कृषक जीवन की समस्याओं को अपने साहित्य में प्रमुखता से उठाया है। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, और मैथिलीशरण गुप्त आदि की रचनाओं में किसान जीवन के विविध पक्षों को प्रमुखता से रेखांकित किया

गया है। प्रेमचंद का 'गोदान' उपन्यास जहां किसान जीवन की महागाथा है, तो वहीं गुप्त जी का खंड काव्य 'किसान', किसान जीवन की दारुण कथा को अभिव्यक्त करता है। परंतु स्वाधीनता के बाद के रचनाकार किसान समस्या पर उदासीन दिखाई देते है। उनकी रचनाओं में किसान जीवन उतना मुखर नहीं दिखाई देता जितना स्वाधीनता पूर्व के रचनाकारों की रचनाओं में दिखाई देता है। जबकि किसान जीवन की समस्याएं पहले से ज्यादा मुखर रूप में दिखाई देतीं है। किसानों को अपनी लड़ाई लड़ने के लिए आज स्वयं सड़कों पर उतरना पड़ रहा है। जरूरत इस बात की है कि युवा लेखकों और संपादकों को इनकी ओर ध्यान देना चाहिए किसानों की समस्याओं को अपनी रचनाओं और पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से उठाना चाहिए।

निष्कर्ष:

मैथिलीशरण गुप्त का खंड काव्य 'किसान' एक महत्वपूर्ण रचना है, जिसमें आत्मचरितात्मक शैली में किसान जीवन की दारुण कथा को अभिव्यक्त किया गया है। वर्तमान समय में यह रचना और भी ज्यादा प्रासंगिक दिखाई देती है। सरकार किसानों को उनकी फसल का न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं दे रही, स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें लागू नहीं की जा रहीं। पूंजीपति व्यापारी सरकारों से सांठगांठ कर किसानों की भूमि अधिग्रहण कर रहे है। किसानों को उनकी भूमि का उचित मुआवजा नहीं दिया जा रहा। आज स्वाधीनता प्राप्ति के इतने सालों बाद भी किसान अपनी ही सरकारों में उपेक्षित दिखाई दे रहा है। उसे अपने हक़ के लिए सड़कों पर उतरना पड़ रहा है। हालिया कृषि कानूनों के खिलाफ सड़कों पर उसका संघर्ष इसका जीता जागता उदाहरण है। गुप्त जी ने अपने खंड काव्य 'किसान' में तत्कालीन किसान जीवन की समस्याओं को उठाया और उनका समाधान भी प्रस्तुत किया। आजकल के लेखकों और संपादकों को भी चाहिए कि वह अपनी रचनाओं और पत्र-पत्रिकाओं में किसानों की उक्त सभी समस्याओं को उठाने का भरसक प्रयत्न करें। जिससे हमारे देश के किसानों की सभी समस्याओं का उचित समाधान हो सके। वह भी खुशहाल जीवन व्यतीत करे। खुशहाल किसान ही खुशहाल भारत का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. चौधरी महिपाल सिंह 'नाला', 'किसान-चेतना' और चौधरी चरण सिंह, ज्ञान भारती प्रकाशन, 4/14 रूपनगर दिल्ली 110007, संस्करण 1981, पृष्ठ-15

2. सतीस चंद्र, मध्यकालीन भारत राजनीति, समाज और संस्कृति आठवीं से सत्रहवीं सदी

तक प्रकाशक: ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, 1/24 आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली 110002, संस्करण 2007, पुनर्मुद्रित: 2008, पृष्ठ-292

3. रामवक्ष, प्रेमचंद और भारती किसान वाणी प्रकाशन, 61-एफ. कमला नगर, दिल्ली-110007, संस्करण: 1982, पृष्ठ-16-17

4. मैथिलीशरण गुप्त, 'किसान', श्री राम किशोर गुप्त द्वारा साहित्य प्रेस, चिरगांव (झांसी) में मुद्रित, संस्करण: 2003 वि०, पृष्ठ-07

5. वही, पृ०-06

6. वही, पृ० 11

7. वही, पृ०-17

8. वही, पृ० -21

9. वही, पृ०-30

10. शंभू नाथ: 'किसानों का इंडिया', वर्तमान साहित्य: 28 एमआईजी, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001 अंक अक्टूबर, 2013, पृष्ठ-20

11. मैथिलीशरण गुप्त, 'किसान', पृ०-38

12. वही, पृ०-42

13. वही, पृ0-49

14. वही, पृ०-53

15. शंभू नाथ: 'किसानों का इंडिया', वर्तमान साहित्य पृष्ठ-19